[Social Issues and Environmental Problems, Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3214

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

# जैव विविधता और उसका संस्थितिक एवं असंस्थितिक संरक्षण

**आशा सक्सेना, सुनीता चौहान**
शासकीय महाविद्यालय, महिदपुर

## साराँश
सामान्य शब्दों में जैव विविधता से तात्पर्य सजीवों (वनस्पति और प्राणी) में पाए जाने वाले जातीय भेद से है। व्हेल मछली से लेकर सूक्ष्मदर्शी जीवाणु तक मनुष्य से लेकर फफूंद तक जैव विविधता का विस्तार पाया जाता है। पर्यावरणीय ह्रास के कारण जैव विविधता का क्षय हुआ है। मानव के अनियंत्रित क्रियाकलापों, बिजली, लालच और राजनीतिक कारणों से जैव विविधता का विनाश बहुत तेजी से हो रहा है। लगातार बढ़ती जनसंख्याा, नगरीय क्षेत्रों की वृद्धि बॉधों, भवनों तथा सड़कों का निर्माण, कृषि के लिए वनों का कटाव, खदानों की खुदाई आदि ऐसे कुछ उदाहरण है जिनसे प्राकृतिक संसाधनों में कमी आई है।
जैव विविधता एक ऐसा संसाधन है जिसे फिर से नहीं बनाया जा सकता है। आज ऐसा कोई कारगर तरीका नहीं है जिससे लुप्त हुए पौधों और जन्तुओं को फिर से उत्पन्न किया जा सके।
जैव विविधता का संरक्षरण मुख्यतः दो प्रकार से किया जा सकता हैः–

1 संस्थानिक संरक्षण (IN SITU CONSERVATION) इसके अन्तर्गत जाति का संरक्षण उनके मूल आवासों पर ही किया जाता है।
2 असंस्थानिक संरक्षण (EX SITU CONSERVATION) इस प्रकार के संरक्षण के अन्तर्गत जाति का संरक्षण उनक मूल आवास से दूर ले जाकर किया जाता है
3 दोनों प्रकार के संरक्षण एक दूसरे के पूरक हैं । इसके अतिरिक्त एक और संरक्षण विधि का भी प्रयोग किया जाता है जिसे इन विट्रो (IN VITRO STORAGE ) संग्रहण कहा जाता है। इसमें पौधों का संग्रहण प्रयोगशाला परिस्थितियों में किया जाता है।

## सामान्य परिचय
सामान्यतः जैव विविधता से तात्पर्य पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवों की विविधता से है । इस विशाल जगत में हमारे चारों और असंख्य जीव विद्यमान है । जीवों की इस विशाल जनसंख्या से भी अधिक आश्चर्यचकित करने वाली एक और बात है जीवों में असाधारण भिन्नता। व्हेल मछली से लेकर सूक्ष्मदर्शी जीवाणु तक मनुष्य से लेकर फफूंद तक जैव विविधता का विस्तार पाया जाता है। जैव विविधता शब्द संख्या विविधता और जीवित जीवों की परिवर्तनशीलता को दर्शाता है। जैव विविधता पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान पर भूमि व पानी में हर जगह है। पृथ्वी पर अकारिकी कार्ययिकी तथा अनुवांशिक आधार पर विविध प्रकार के जीव पाये जाते हैं। सरल शब्दों में कहें तो जैव विविधता से तात्पर्य सजीवों (वनस्पति और प्राणी) में पाए जाने वाले जातीय भेद से है। भू पृष्ठ की वर्तमान जैव विविधता अरबों वर्षों से हो रहे जीवन के सतत विकास की प्रक्रिया का परिणाम है । तब से अब तक अनेक प्रकार के जीवों पादपों और वनस्पतियों का विकास हुआ तो अब तक अनेक प्रजातियॉ विलुप्त भी हो चुकी हैं ।
पर्यावरणीय ह्रास के कारण जैव विविधता का क्षय हुआ है। जीवों की अनेक प्रजातियॉ विलुप्त हो गयी हैं तथा कई प्रजातियॉ मानव के अनियंत्रित क्रियाकलापों, के फलस्वरूप शनैः शनैः विलुप्त होने के कगार पर हैं। मानव के अनियंत्रित क्रिया कलापों, बिजली, लालच और राजनीतिक कारणों से जैव विविधता का विनाश बहुत तेजी से हो रहा है। लगातार बढ़ती जनसंख्याा, नगरीय क्षेत्रों की वृद्धि बॉधों, भवनों तथा सड़कों का निर्माण,

कृषि के लिए वनों का कटाव, खदानों की खुदाई आदि ऐसे कुछ उदाहरण है जिनसे प्राकृतिक संसाधनों में कमी आई है।

जैव विविधता एक ऐसा संसाधन है जिसे फिर से नहीं बनाया जा सकता है, जो जीव पादपों और वनस्पति एकबार नष्ट हो गये वे हमेशा के लिए हमसे विछड़ जाते हैं । आज ऐसा कोई कारगर तरीका नहीं है जिससे लुप्त हुए पौधों और जन्तुओं को फिर से उत्पन्न किया जा सके।

## जैव विविधता का संरक्षण

जैव विविधता का संरक्षरण मुख्यतः दो प्रकार से किया जा सकता हैः–

1 संस्थानिक संरक्षण या स्व आवासीय संरक्षण (IN SITU CONSERVATION )

जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि इसमें जीवों को अन्यत्र स्थान्तरित किये बिना उनके प्राकृतिक आवास में ही उनके अनुकूल दशाएं उपलब्ध करायी जाती है। वन्य प्राणी एवं पादप प्राकृतिक परिस्थितियों में सुरक्षित रहकर अपन वंश आगे बढ़ा सकें । इसके लिये राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यानों की स्थापना की जाती है। संस्कृतिक संरक्षण कृत्रिम आवासीय संरक्षण की तुलना में अधिक कारगर एवं फलदायी होता है। जीवों के लिए उनके प्राकृतिक आवास ही सर्वाधिक उपयुकत स्थल होते है। स्व आवासीय संरक्षण के अन्तर्गत वन्य जीवों और पादपों के प्राकृतिक स्थल का चयन करके खाद्य श्रंखला के अनुरूप प्राणियों एवं वनस्पति को संरक्षण प्रदान किया जाता है। जिस संकटग्रस्त प्राणी या वनस्पति को संरक्षित करना होता है उसके अनुसार प्रकृतिक आवास में ही अनुकूल परिस्थितियॉ उपलब्ध करायी जाती हैं।

2 असंस्थातिक या कृत्रिम संरक्षण (EX SITU CONSERVATION ) इसके अन्तर्गत संकटग्रस्त अथवा विलुप्ति की कगार पर खड़े वनस्पति एवं जन्तुओं को बचाने के लिए उनके प्राकुतिक आवास के समान ही कृत्रिम आवास बनाकर सुरक्षित रूप से वहॉ स्थानान्तरित किया जाता है। मानव के अनियंत्रित क्रिया कलापों के कारण बहुत तेजी से वन्य प्राणियों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं। चिड़िया घर या जन्तुआलयों का निर्माण कर विभिन्न जीव–जन्तुओं का संरक्षण व संवर्धन किया जाता है। इस प्रकार के संरक्षण की सफलता प्राणियों के लिए उपलब्ध करायी गयी दशाओं पर निर्भर करता है। इसमें प्राणियों की आवश्यकताओं के साथ उनकी सुरक्षा का भी ध्यान रखा जाता है। प्राणियों के विचरण के पर्याप्त स्थान साह्यचर्य के लिए आवश्यक प्राणी, प्राकृतिक आवास के समान तापमान भौजन की आपूर्ति आदि दशाओं को ध्यान में रखा जाता है।

अनुकूल दशाओं में प्राणियों की संख्या बढ़ने पर उनके प्राकृतिक आवास में सुरक्षित पहुचा दिया जाता है । इसी प्रकार विलुप्त हो रहे वनस्पतियों के संरक्षण के लिए ग्रीन हाउस पौधा घर बना कर उनके अनुकूल जलवायु, दशाएं उपलब्ध करायी जाती हैं । पौध शालाओं में तैयार पौधों को प्राकृतिक आवास स्थलों में स्थान्तरिकत कर दिया जाता है।

दोनों प्रकार के संरक्षण एक दूसरे के पूरक हैं । इसके अतिरिक्त एक और संरक्षण विधि का भी प्रयोग किया जाता है जिसे इन विट्रों (IN VITRO STORAGE) संग्रहण कहा जाता है। इसमें इन विट्रो का शब्दशः अर्थ है **''ग्लास में** ''। जर्म प्लाज्मा के संग्रहण के अन्तर्गत पौधों का संग्रहण प्रयोगशाला में किया जाता है। जर्म प्लाज्मा के संग्रहण के लिए इन विट्रो पौधों को प्रविभाजी शीर्ष, कलिका या तना शीर्ष द्वारा लगाया जाता है और परीक्षण नलिका में इनको विभाजन द्वारा बढ़ाया जाता है। तत्पश्चात् आवश्यक लम्बाई प्राप्त करने के बाद इन्हें प्रत्यारोपित कर दिया जाता है।

## *सन्दर्भ*

1. *जोशी रतन (2004) **पर्यावरण अध्ययन,** साहित्य भवन, आगरा।*
2. *चक्रवर्ती पुरूषोत्तम (2005), पर्यावरण चेतना, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।*
3. *कुमार महेन्द्र एवं कुमार यू. (2009), जैव विविधता के सिद्धान्त और संरक्षण।*